

Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

---

### THINKING PROCESS

चिंतन एक जटिल-संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें कई अवस्थाएं या प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। जिसमें कुछ अवस्थाएं या प्रक्रियाएं निम्नलिखित हैं -

#### **(1) विचारात्मक प्रक्रिया या अवस्था :-**

चिंतन का संबंध विचारों से होता है। जब किसी व्यक्ति के सामने कोई समस्या उत्पन्न होती है तो सर्वप्रथम उस समस्या से सम्बद्ध विभिन्न विचार उस व्यक्ति के मानस पर उठते हैं। इन्हीं विचारों की श्रृंखला या अनुक्रम के रूप में चिंतन की क्रिया जारी रहती है।

## (2) प्रतीकात्मक प्रक्रिया :-

चिंतन में प्रतीकों की प्रधानता रहती है। चिंतन का संबंध वस्तुतः उपस्थित तथा अनुपस्थित दोनों तरह के उद्दीपनों से होता है। वे सभी उद्दीपन वास्तव में प्रतीक के रूप में चिंतन के समय व्यक्ति के मानसिक पटल पर अपनी भूमिका निभाती हैं, जिससे चिंतन की क्रिया अपनी मंजिल के प्रति सक्रिय रूप से जारी रहती है ।

## (3) समस्या समाधान प्रक्रिया :-

चिंतन में समस्या समाधान प्रक्रिया मूल-रूप में काफी महत्वपूर्ण होती है। इसका महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि चिंतन को समस्या समाधान प्रक्रिया भी कहा जाता है। वास्तविकता यह है कि चिंतन का आरंभ किसी समस्या से होता है और चिंतन की क्रिया उस समस्या के समाधान तक जारी रहती है। चिंतन का संबंध ऐसी समस्या से होता है जो समाधान योग्य होती है। यह दूसरी

बात है कि एक व्यक्ति उस समस्या के समाधान में सफल हो भी सकता है और दूसरा व्यक्ति उसमें सफल नहीं भी हो सकता है।

**(4) प्रयत्न एवं भूल प्रक्रिया :-**

चिंतन में प्रयत्न एवं भूल-प्रक्रिया सक्रिय रहती है। जब व्यक्ति किसी समस्या के सम्बन्ध में चिंतन शुरू करता है तो इसके साथ ही यह प्रक्रिया शुरू हो जाती है। शुरू में भूलें अधिक होती हैं, लेकिन बढ़ते हुए प्रयत्न के कारण भूलों की संख्या घटती जाती है और अन्त में व्यक्ति बिना भूल के ही अपनी समस्या का समाधान कर लेता है।

**(5) मानसिक तत्परता प्रक्रिया :-**

चिंतन प्रक्रिया का गहरा संबंध मानसिक तत्परता से होता है। व्यक्ति अपनी समस्या से सम्बद्ध समाधान ढूँढते समय एक विशेष दिशा में प्रयत्न करने का निर्णय लेता है। चिंतन की यही

दिशा मानसिक सेट कहलाता है। जब व्यक्ति का यह सेट सही दिशा में होता है तो उसका चिंतन सफल होता है और समस्या का समाधान शीघ्र ही हो जाता है। इसके विपरीत इस सेट के गलत होने पर समस्या का समाधान नहीं हो पाता है और चिंतन विफल साबित होता है ।